4 चन्द्रशेखर आज़ाद

सद्गुरु शरण अवस्थी

(जन्म : सन् 1901, मृत्यु : सन् 1973)

सद्गुरुशरण अवस्थी मूलत : नाट्यकार निबंधकार एवं समीक्षक थे। कानपुर में बी. एन. एस. डी. कालेज के आचार्य थे। श्री अवस्थी का लेखन उनके जीवनकाल से जुड़ा हुआ है जो मूलत: प्रेरणादायक है।

'तुलसी के चार पल' तथा 'भ्रमित पथिक' इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं।

प्रस्तुत संस्मरण में लेखक ने चन्द्रशेखर आज़ाद से जुड़ी हुई स्मृतियों के माध्यम से उनके जीवन व्यक्तित्व तथा उनकी निडरता पर दृष्टिपात किया है। असाधारण प्रतिभा के धनी चन्द्रशेखर आज़ाद शक्ति के पुंज थे। उन्हें अपने आप पर पूर्ण विश्वास था। आकर्षक व्यक्तित्व, निडर, आत्म निर्भर, मितभाषी इस वीर पुरुष को स्वर्गीय कहने से लेखक को बड़ी चोट पहुँचती है। उनसे जुड़ी अनेक सूक्ष्म बातों पर लेखक ने प्रकाश डाला है।

उन्हें स्वर्गीय कहते चोट लगती है। न जाने उनकी स्मृति आज क्यों सजग हो उठी। भूलना एक महान् गुण है। वह समय का विस्तार है। स्मृति के बोझ का वह विश्राम हैं। शरीर में लगे हुए खरोचे, देह में लगे हुए घाव, समय के सहारे सूखते और भरते हैं। मन पर लगी हुई चोट, हृदय पर लगा हुआ आघात विस्मृति के सहारे ही ठीक हो पाता हैं। स्मृति की तीव्रता शास्त्रों के अनुशीलन और पुस्तकों के स्वाध्याय से मिलती है, और विस्मृति का वरदान सन्तों के सत्संग और विराग के अनुष्ठान से प्राप्त होता है। यदि संसार में विस्मृति ,स्वत:सिद्ध न हो, तो लोग अपने-अपने घाव प्रतिदिन कुरेदते रहें और जीवन कोढ़ की खाज हो जाए।

क्षण आते हैं और चले जाते हैं। उनके आवर्तन में स्मृतियों की छाप लगती और धुलती चलती है। धुले हुए पाटव के भीतर से भी कुछ आकार झाँककर रूपरेखा से परिचय कराया करते हैं। ये आकार क्षणों के शृंगार भी हो सकते हैं, चाहे स्वत:कितने ही सुखमय हों और वे आकार क्षणों के अभिशाप भी हो सकते हैं, चाहे स्वत: कितने ही सुखपूर्ण हों। वे व्यक्ति, वे घटनाएँ, वे परिस्थितियाँ धन्य हैं; जिनकी अमिट छाप क्षणों का श्रृंगार है। उनके लिए विस्मृति समय के प्रवाह को रोककर स्वयं घण्टों प्रतीक्षा करती है। मन में सन्तत्व और चिराग की स्वत: वर्षा हुआ करती है।

चन्द्रशेखर एक ऐसे ही व्यक्ति, ऐसी ही घटना और ऐसी ही परिस्थिति थे। उनकी स्मृति मन का पुण्य है।

मेरी न जाने कितनी बार उनसे भेंट हुई होगी। मेरे छोटे भाई के मित्र होने के कारण वे मुझे हमेशा भइया कहा करते थे। किसी के घर, किसी सड़क पर, किसी रेलवे स्टेशन पर, जिस हालत में भी वे दिन के किसी क्षण में मुझे मिले। उन्होंने हमेशा ही मेरे प्रति अग्रज का सम्मान प्रदर्शित किया। क्रान्तिकारी लोग वचन के बड़े कृपण और मंन्तव्य के बड़े गोप्य होते थे, पर उन्होंने अपना समझकर मुझसे कभी कोई दुराव नहीं रखा। उन्हें भय बिलकुल न था। वे निश्चिन्त थे कि वे जीते-जी किसी के हाथों नहीं आ सकते। कटि से लटकते हुए दो माउज़र पिस्तोल और कन्धे पर पड़ी हुई कारतूस की पेटी पर उनका पूरा भरोसा था। जिस किसी के घर हम लोगों ने उन्हें छिपाकर रखने की व्यवस्था की, उसे वे हमेशा निश्चिन्त रखते थे। उन्होंने स्पष्ट कह रखा था कि वे चार घर दूर पहुँच कर तमंचे बजाएँगे जिससे उनके आश्रयदाता पर कोई आपत्ति न आ सके।

उन्होंने महात्मा गांधी की अहिंसा की निस्सारता पर मुझे घण्टों समझाया होगा, और मैंने उनकी हिंसा पद्धति की खुलकर बुराई की होगी, पर हम दोनों का पारस्परिक आदर बढ़ता ही गया, क्योंकि हम दोनों अपने विचार में ईमानदार थे। मेरा विचार केवल तर्क का शृङ्गार और मानसिक प्रयत्य मात्र था। उनके व्यवहार पक्ष की शक्ति मुझमें न थी। उनका विचार कर्म की शोभा और योगक्षेम का प्रकाश था। उनके व्यक्तित्व मे इतना बल था कि मेरी इच्छा के प्रतिकूल वे मुझसे काम ले लिया करते थे और

उनकी बात पूरी करने में मैं अपने को गौरवान्वित अनुभव करता था।

क्रांतिकारियों के कई विस्फोट कार्य और मेरे परिचय के अन्तरकाल में ही हुए, पर उन पर बातें करने और पूछने का मुझे संभव न था जो भी थोड़ा बहुत वे संकेत कर देते थे, मेरी मुद्रा में उसका अनुमोदन न देखकर प्रसंग टल जाया करता था। उनका शरीर शक्तिका पुंज था, और उनकी आत्मनिर्भरता की प्रतिकृति। उनकी स्फीत शिराओं में उष्ण रक्त का भरपूर प्रवाह या। उनके कार्यों की शोभा मुखरता और वाणी की शोभा मौन थी। न जाने कितने रूपों में मैंने उन्हें देखा होगा। कलंगीदार पंजाबी पगड़ी और ढीले सलवार में वे जितने अच्छे लगते थे, खद्दर के कुरते और बंगाली धोती में भी वे वैसे हो खिलते थे। साधारण तया वे खुले गले का कोट और दोनों पैरों को कछौटे से ढकनेवाली धोती पहनते थे। मैंने उन्हें सूट और हैट में भी देखा है और पूरे पंजाबी परिधान में भी। हर प्रकार के वस्त्र के भीतर वे खिलते थे।

कठोर और हिंसापूर्ण संदर्भ के भीतर उनका मक्खन सदृश कोमल मन मैंने अच्छी तरह देखा है। उनकी वीरता में जो उग्रता थी, उसका लक्ष्य राजनीतिक अपराध था और भारत को स्वतन्त्र करने की बलवती आकांक्षा थी। उनके साहस में जो ध्वंस की सूचना थी, उसका आलम्बन विदेशियों के पशुबल की अकड़ थी। अपने देश के जो निरीह प्राणी उनके क्रांति के मार्ग में आने के कारण नष्ट हो जाते थे, उनके लिए चन्द्रशेखर के पास अपार सहानुभूति और छलकते हुए आँसू थे। पर उनकी सार्वजनिक कार्यपद्धति में दया का दूसरा नाम कायरता और क्षमा का दूसरा नाम आपत्ति था। मेरे जैसे उदात्त वृत्तियों की दुहाई देने वाले व्यक्तियों को उन्होंने परिणाम द्वारा कई बार प्रमाणित कर दिया था कि उनकी ही कार्य-पद्धति समीचीन हैं।

ईश्वर, धर्म और पाप-पुण्य विषयक विवाद के लिए उनके पास समय न था। इस तर्क-वितर्क को वे अवकाश का वाक्विलास समझते थे। मैं कह नहीं सकता कि उनकी इन विषयों के सम्बन्ध में क्या मान्यताएँ थीं। पर यह निर्विवाद कहा जा सकता है कि जिस मान्यता से मन में हिचक, शैथिल्य, कार्यभीरुता, बुद्धिवाद, पलायनवाद को अवसर मिले, उसके वे पूर्ण प्रतिकूल थे।

हाँ, पर पाप और पुण्य की अनेकार्थी और आज की व्यापक व्याप्ति को चाहे वे न मानते हों-और कादाचित् नहीं भी मानते थे- परन्तु जीवन की पवित्रता, सामाजिक निर्मलता, वैयक्तिक उज्जवलता तथा नैतिक उच्चता के वे बड़े पोषक थे। कोई यह विश्वास नहीं कर सकता कि हत्याओं को बेधड़क कर डालनेवाले हाथ स्पर्श में इतने कोमल और नागरिक हो सकते हैं।

मैं जब इन पंक्तियों को लिख रहा हूँ, तब भी उनकी मनुहार मेरे सामने घूम रही है। कितने अधिक व्यक्तियों में उनकी ममता की जड़ें जमी हैं, यह आज उनके उन्मूलित होने के बाद ज्ञात हो रहा है। राजनैतिक उन्हें सराहें और स्वंतन्त्रता प्राप्ति का अग्रदूत समझकर उनकी प्रतिमा बनाकर अर्चना करें। इतिहासकार अपनी पुस्तकों को उनकी प्रशंसा से सजावें और उनके महत्त्व का निर्णय करें, साहित्यक उन पर उपन्यास, कहानियाँ और काव्य की रचना करके उन्हें अमर बना दें, सम्पादकगण उनापर लेख और टिप्पणियाँ लिखकर उनके साथी और सहकारी सभाओं में भाषण दें और एकांत में आँसू बहावें; परन्तु मेरे ऐसे अलग देखनेवाले किन्तु निकट अनुभव करनेवाले, कर्मक्षेत्रों से कोसों दूर, प्राणी केवल धवल कागज पर कुछ काली सतरें खींचने के अतिरिक्त कर ही क्या सकते हैं ? इन पंक्तियों को उकसानेवाले भी वही हैं, उन्हीं की विस्मृति तक पहुँचने के लिए उन्हीं की स्मृति को आज की पंक्तियाँ अर्पित हैं।

शब्दार्थ-टिप्पणी

स्मृति याद **सजग** जागरुक **आघात** चोट **पाटव** पटुता, दृढ़ता **कोढ़** सफेद दाग **खाज** खुजली, **ध्वंस** विनाश, **उन्मूलन** जड़ से उखाड़ना **कोस** अन्तर की माप (दो मील या 3.2 किमी) **उकसाना** भड़काना **समीचीन** समुचित **शैथिल्य** ढीलापन, शिथिलता

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दिए गए विकल्पों में से उचित विकल्प चुनकर लिखिए :

(1)हृदय की चोट किससे ठीक होती है ?

(क) दवाई से (ख) स्मृति से (ग) विस्मृति से (घ) वरदान से

(2) चन्द्रशेखर आज़ाद लेखक को क्या कहकर बुलाते थे ?

(क) भइया कहकर (ख) भाई साहब कहकर (ग) बड़ेभाई कहकर (घ) दादा कहकर

(3) लेखक ने चन्द्रशेखर आज़ाद के मन को किसके समान बताया हैं ?

(क) नारियल के समान कठोर (ख) फूल की तरह कोमल

(ग) मक्खन सदृश कोमल (घ) पत्थर के समान कठोर

(4) चन्द्रशेखर आज़ाद के लिए दया का दूसरा नाम क्या था ?

(क) सहानुभूति (ख) कायरता (ग) साहस (घ) वीरता

(5) क्रांतिकारी लोग कैसे होते थे ?

(क) वचन के कृपण व मन्तव्य के बड़े गोप्य

(ख) वचन के पक्के व मन्तव्य के बड़े गोप्य

(ग) वचन के कृपण व मन्तव्य के स्पष्ट

(घ) वचन के कच्चे व मन्तव्य के बड़े स्पष्ट

2. एक-एक वाक्य में उत्तर दीजिए :

(1) स्मृति की तीव्रता कैसे प्राप्त होती है ?

(2) विस्मृति का वरदान कैसे मिलता है ?

(3) चन्द्रशेखर आज़ाद किन गुणों के पोषक थे ?

(4) लेखक ने किन व्यक्तियों, घटनाओं और परिस्थितियों को धन्य माना है ?

(5) चन्द्रशेखर आज़ाद को साहित्यकार कैसे अमर बना सकते है ?

3. दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए :

(1) शरीर और मन पर लगी चोट में क्या फर्क है ?

(2) लेखक कब अपने आप को गौरवांवित अनुभव करते थे ?

(3) चन्द्रशेखर आज़ाद के विषय में निर्विवाद रूप से क्या कहा जा सकता हैं ?

(4) लेखक और आज़ाद के बीच पारस्परिक आदर क्यों बढ़ता गया ?

4. पाँच से छः वाक्यों में उत्तर लिखिए :

(1) जीवन में क्षण की क्या विशेषता है ?

(2) चन्द्रशेखर आज़ाद की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

(3) चन्द्रशेखर आज़ाद किन वस्त्रों में खिल उठते थे ?

(4) चन्द्रशेखर आज़ाद की कार्यप्रणाली के विषय में लेखक क्या कहते हैं ?

5. आशय स्पष्ट कीजिए :

(क) विस्मृति के न रहने पर जीवन कोढ़ की खाज़ हो जाएगा।

(ख) भूलना एक महान गुण है।

6. (1) विलोम शब्द लिखिए :

स्वर्ग, विराग, स्मृति, कृपण, प्रतिकूल ,उऋण

(2) समानार्थी शब्द लिखिए-

अभिशाप, कटि, ध्वंस, अपराध, निरीह

7. (1) उपसर्ग अलग कीजिए :

विस्मृति, अभिशाप, आघात, अमिट

(2) प्रत्यय अलग कीजिए :

राजनीतिक, कायरता, व्यक्तित्व, साहित्यिक, स्वर्गीय

योग्यता-विस्तार

विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- चन्द्रशेखर आज़ाद के समकालीन क्रान्तिकारियों के विषय में जानकारी प्राप्त कीजिए। चित्र के साथ हस्तलिखित अंक तैयार कर कक्षा में लगाइए।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- स्वतंत्रता आन्दोलन में भाग लेनेवाले गुजरात के क्रान्तिवीरों के विषय में जानकारी प्राप्त कर कक्षा में सुनाएँ।

●